



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असुधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्रतिभार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 64] नई दिल्ली, बुध्स्पतिवार, फरवरी 10, 1994/माघ 21, 1915
No. 64] NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 10, 1994/MAGHA 21, 1915

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

शुद्धिपत्र

नई दिल्ली, 10 फरवरी, 1994

सा.का.नि. 89(अ).—भारत के राजपत्र आधारण के भाग-II खंड-3, उप-खंड (i) में जल भूतल परिवहन मंत्रालय की अधिसूचना सं. सा.का.नि. 845(अ) दिनांक 3-11-1992 के साथ प्रकाशित टूटीकोरिन पत्तन कर्मचारी (छुट्टी यात्रा गियायत) प्रथम संशोधन विनियम 1992 में हिंदी रूपान्तर में पृष्ठ 1 पर फा. सं. पी आर-12016/9/पीई-1 को

पी आर-12016/9/92-पी ई-1 पढ़ा जाए और अंग्रेजी स्थांतर में पृ. 12 पर पैरा सं. 14(4) में 7 से 14 पंक्तियों को निम्न प्रकार से पढ़ा जाए :—

“छोटी बातों की शिथिलीकरण कि क्रम संख्याओं को नहीं पेश करना, इन विनियमों के अधीन कर्मचारी या उनके परिवार या दोनों द्वारा यात्राएं किये जाने के पूर्व अध्यक्ष या उपाध्यक्ष को पूर्व सूचना देने की बाबत, अध्यक्ष या उपाध्यक्ष द्वारा छूट दी जा सकेगी। यदि दावे सही हों और यात्रा के किए जाने की सम्भाविकता की बाबत उसका श्रन्यथा समाधान हो जाए। अध्यक्ष द्वारा स्वयं ऐसी छूट श्रद्धतः गुणागुण के आधार पर वास्तव में उचित मामलों में न कि साधारण नियमों के रूप में दिए जाने पर कोई आक्षेप नहीं होगा”।

[फा. सं. पीआर-12016/9/92-पीई-I]

अशोक जोशी, संयुक्त सचिव,

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 10th February, 1994

G.S.R. 89(E).—In the Tuticorin Port Employees (Leave Travel Concession) first amendment Regulations, 1992 published with the notifications of the Government of India in the Ministry of Surface Transport G.S.R. No. 845(E) dated 3-11-1992 in the Gazette of India; Extraordinary part II, section 3 sub-section(i) at page No. 1 in Hindi version, file No. PR-12016/9/PE-I should be read as PR-12016/9/92-PE-I and at page No. 12 in the English version in the paragraph No. 14(4) from line no. 7 to 14 may be read as follows :

“of declared place of visit during journey, under these regulations may be made by the Chairman or Deputy Chairman, if he is otherwise satisfied in regard to the genuineness of the claim and the bonafides of the journey having been performed. There shall be no objection to such relaxation being made by the Chairman himself purely on merits in really deserving cases and not as general rule.”

[File No. PR-12016/9/92-PE-I]

ASHOKE JOSHI, Jt. Secy.